श्रीलंका
कर्ज चुकाते बंदर

प्रदेश की राजनीति में ग्वालियर
चंबल संभाग की भूमिका

विश्व में भारत
का बढ़ता वर्चस्व

विकासोन्मुखी जनचेतना का मुखर स्वर
मासिक

प्रगति सोपान

वर्ष 15 अंक 1 मई 2023 मूल्य : 20 रुपये

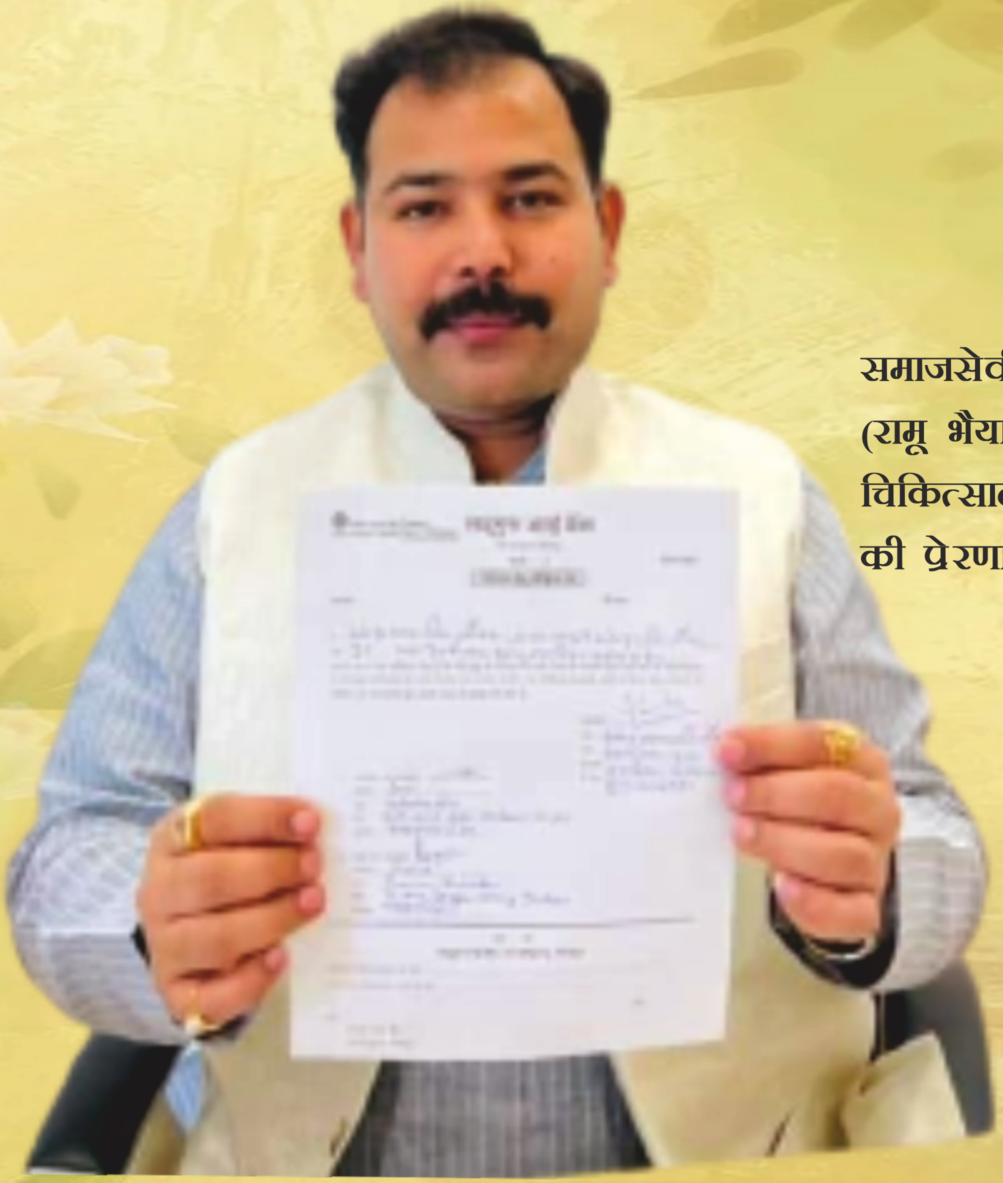

समाजसेवी श्री देवेन्द्र प्रताप सिंह तोमर (रामू भैया) चित्रकूट के सद्गुरू नेत्र चिकित्सालय में युवाओं को नेत्रदान की प्रेरणा देते हुए.

मैंने तो कर दिया है... क्या आप भी... ?

www.pragatisopan.com

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते है।

शत् शत् नमन

प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर

स्व. श्रीमती विजय कुमारी सक्सेना

प्रगति सोपान पत्रिका परिवार की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजली

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए अंक का डिजिटल संस्करण वेबसाइट pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते है।

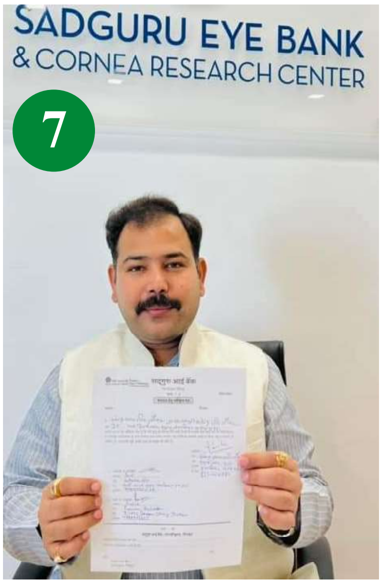

प्रगति सोपान

वर्ष 15 अंक 1 : मई 2023

- ❖ संपादकीय 2
- ❖ विश्व में भारत का बढ़ता वर्चस्व 4
- ❖ मैंने तो कर दिया है... क्या आप भी...? 7
- ❖ श्रीलंका : कर्ज चुकाते बंदर 9
- ❖ महिलाओं को स्वावलंबी बनाती सरकारें 12
- ❖ भारतीय नायक : बाबा साहब 13
- ❖ प्रदेश की राजनीति में ग्वालियर चम्बल संभाग की भूमिका 15
- ❖ विपक्ष की एकजुट होने की कोशिश में मुश्किलें 16
- ❖ शोध : भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में हिन्दी साहित्य की भूमिका 18
- ❖ धर्म पर आस्था 20
- ❖ ऑस्कर का अर्थशास्त्र 22

सम्पादक

अभिषेक सक्सेना

उप–सम्पादक

दीपक शर्मा

ब्यूरो चीफ

विभोर सक्सेना

सम्पादकीय सम्पर्क :

एल–937, दर्पण कॉलोनी,
ठाटीपुर, ग्वालियर – 474 011
वेब : **www.pragatisopan.com**

डिजाइन : **शिवानी कम्प्यूटर ग्राफिक्स, ग्वा.**

मौलिक लेख आमंत्रित हैं। कृपया लेखों को स्वच्छ तरीके से लिखकर प्रेषित करें। ई–मेल भी कर सकते हैं।
ईमेल : **editor.pragatisopan@gmail.com**

समस्त विवादों के लिए न्याय क्षेत्र–ग्वालियर

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

संपादकीय... 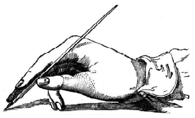

श्री देवेन्द्र प्रताप सिंह तोमर (रामू भैया) ग्वालियर एवं चंबल क्षेत्र के नेता हैं। अपनी कार्यशैली से हर किसी के दिल पर राज करते हैं। देवेन्द्र प्रताप का जन्म आर्य नगर मुरार में दिनांक 17 फरवरी 1986 को हुआ था। इनका बचपन से ही दादा जी स्वर्गीय मुंशी सिंह जी तोमर एवं दादी माँ शारदा देवी से विशेष स्नेह रहा है। पिता श्री नरेन्द्र सिंह तोमर एवं माँ श्रीमती किरण तोमर के ज्येष्ठ पुत्र हैं। इन्होंने ग्वालियर से शिक्षा ग्रहण की है। बचपन से ही घर में राजनीति एवं समाजसेवा का माहौल देखा, उसका इनके जीवन पर अमिट प्रभाव पड़ा। इनकी राजनीति एवं समाजसेवा के अतिरिक्त खेलों में विशेष रूचि रही है। धार्मिक माहौल में पले बड़े देवेन्द्र की रूचि धार्मिक आयोजनों में भी देखी गई है।

श्री नरेन्द्र तोमर द्वारा ग्वालियर, मुरैना, डबरा व मुरार आदि कई स्थानों पर रामकथा का आयोजन किया गया है, जो सतत् जारी है। इन आयोजनों में माँ कनकेश्वरी देवी जी की उपस्थिति से भक्तों की भारी संख्या आती रही है। देवेन्द्र द्वारा अन्य कार्यकर्ताओं के साथ आयोजनों को सफल बनाने के लिए अथक प्रयास किए जाते हैं। कथा स्थल पर भक्तों को आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करने के अलावा स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

अनुभव और ज्ञान प्राप्त करने का एक सही माध्यम देशाटन है। देवेन्द्र सिंह द्वारा भारत के अधिकांश भागों में देशाटन कर अनुभव प्राप्त किए हैं एवं धार्मिक स्थानों की यात्रा कर आशीर्वाद प्राप्त किया है। अभी हाल ही में धर्मशाला जाकर पूज्य बौद्ध धर्म गुरू दलाई लामा का आशीर्वाद प्राप्त किया है।

देवेन्द्र सिंह मध्यप्रदेश भारतीय जनता युवा मोर्चा के सदस्य के रूप में चंबल व ग्वालियर संभाग में कई आयोजनों में भागीदारी कर युवाओं के प्रेरणास्त्रोत बन गए हैं। कोरोना महामारी के समय इन्होंने लोगों की भरपूर मदद की है। कई अस्पतालों में मरीजों से संपर्क बनाए रखा। मरीजों को दवा आदि की आवश्यकता होने पर पूर्ण सहयोग दिया है। गरीबों को आवश्यक भोजन एवं अन्य आवश्यक सामग्री पहुंचाने में भरपूर योगदान दिया है। निष्काम भाव से सेवा करना उनकी आदत है। समय–समय पर रक्तदान शिविरों का आयोजन कर एवं नेत्रदान हेतु लोगों को जागरूक कर, वे युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत बन गए हैं।

देवेन्द्र प्रताप सिंह हॉकी मध्य भारत के अध्यक्ष के रूप में अच्छा कार्य कर चुके हैं। उनकी मेहनत व लगन का नतीजा है कि उन्हें हॉकी इंडिया का वाइस प्रेसिडेंट चुना गया है। यह ग्वालियर व मध्यप्रदेश के लिए गौरव की बात है। यह पहला मौका है जब मध्यप्रदेश के किसी व्यक्ति को यह सम्मान प्राप्त हुआ है।

श्री देवेन्द्र प्रताप भारत में हॉकी की दुनिया में एक बड़े नाम के रूप में जाने जाते हैं। उनके द्वारा ग्वालियर में सीनियर पुरूष हॉकी राष्ट्रीय चैंपियनशिप 2019 का सफल आयोजन किया गया। वह हॉकी को भारत में एक खेल के रूप में नई ऊँचाइयों तक ले जाने में सफल रहे हैं।

खेल जगत में उन्हें आदर और सम्मान प्राप्त है। उन्हें मध्यप्रदेश हैंड बाल एसोसिएशन का संरक्षक बनाया गया है। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी के जन्मदिन पर प्रतिवर्ष सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भव्य आयोजन किया जाता है। कार्यक्रम संयोजक देवेन्द्र प्रताप सिंह द्वारा देश के प्रतिष्ठित विद्वानों,

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

कलाकारों व कवियों को आमंत्रित कर आयोजन को भव्यता प्रदान की गई है। ऐसे कार्यक्रमों से लोगों को माननीय अटल जी को याद कर श्रद्धासुमन अर्पित करने का अवसर प्राप्त होता है। उनका यह प्रयास प्रशंसनीय है।

भारत एक युवा देश है। जिस देश का युवा विनम्र, शिक्षित एवं मेहनती होगा वह राष्ट्र सदैव तरक्की के रास्ते पर चलता रहेगा। हमारी युवा पीढ़ी हर क्षेत्र में अग्रणी है जो देश की तरक्की में चार चांद लगा रही है।

देवेन्द्र प्रताप स्वभाव में सरल, सौम्य व अपने पिता की तरह धैर्यवान हैं। लोगों से स्नेह पूर्वक मिलना व उनका सहयोग करना उनके स्वभाव में है। अपने पिता के पदचिन्हों पर चलते हुए समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति का साथ देने के कारण वह आज आमजन के दुलारे बन गए हैं। समाज को उनसे काफी उम्मीदें हैं। अपने पथ पर सतत् आगे बढ़ते रहें यही हम सब की कामना है।

भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं !

हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नही !!

— अभिषेक सक्सेना

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

विश्व में भारत का बढ़ता वर्चस्व

आज भारत ने तेजी से अपनी 'साफ्ट स्टेट' की छवि से आगे बढ़कर, मजबूत एवं स्पष्ट हितों वाले देश के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर ली है। भारत की मुखर विदेश नीति एवं भारतीय विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर के समय समय पर वैश्विक शक्तियों को आईना दिखाने वाले जवाबों ने सबका ध्यान आकर्षित किया है।

भारत ने अपने संघर्ष एवं कूटनीति के बल पर आज एक ऐसा मुकाम हासिल किया है कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् का स्थायी सदस्य न होते हुए भी आज भारत की बात को ध्यान से सुना जाता है एवं विश्व के अधिकांश स्थायी एवं अस्थायी सदस्य भारत के विचारों या पक्ष को जानने के लिए लालायित रहते हैं।

पूर्व में भारत की विदेश नीति एक लंबे हिचकिचाहट के दौर से गुजरी है जिसमें भारत अपने कद एवं संभावनाओं को बहुत कमतर रखते हुए विश्व मंच पर अपने आप को सही रूप में रखने में असमर्थ रहा था। वर्ष 1947 में कश्मीर के मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र में ले जाना, शीत युद्ध के दौरान चीन एवं रूस के बीच की दूरियों को सही समय पर भांपने में गलती करना, अक्साई चिन एवं अरूणाचल के मुद्दे पर चीन के इरादों को नही समझ पाना, अमेरिका एवं चीन के लिए पाकिस्तान की जरूरत को गंभीरता से नहीं लेना, ये सब पूर्व में भारतीय विदेश नीति की वैश्विक अपरिपक्वता को दर्शाता है। ऐसी गलतियों के कारण ही आजादी के बाद भारत के साथ वैश्विक पटल पर एक पक्षपाती रवैया कायम रहा एवं भारत जैसे इतने बड़े लोकतंत्र के हितों को वह स्थान नहीं दिया गया जिसका वह अधिकारी था। वर्ष 2014 के बाद से इस परिस्थिति में व्यापक परिवर्तन दिख रहा है।

भारतीय विदेश नीति में अभूतपूर्व परिवर्तन तब आना प्रारंभ हुआ जब केन्द्र में 2014 में भाजपा की

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

सरकार बनी। यह दौर अपने हितों को आगे रखते हुए शक्तिशाली निर्णयों का एवं ऊर्जावान कूटनीति का है। विदेश मंत्री डॉ. जयशंकर के अनुसार, यह स्वर्णिम दौर भारत के लिए क्रान्तिंकारी परिवर्तन का प्रारंभिक दौर है।

वर्तमान में भारत की विदेश नीति निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं पर कार्य कर रही है।

इसमें पहला मुख्य बिंदु है यथार्थवाद। वर्तमान विदेश नीति पूरी तरह से यथार्थवादी है, जिसका उदाहरण हमें यूक्रेन संकट के दौरान रूस के साथ कच्चे तेल की खरीद जैसे निर्णयों में देखने को मिलता है। यानि कि अपने कमजोर व मजबूत पक्षों को समझते हुए एक पक्षीय प्रोपगैंडा या वैश्विक दवाब में न आकर अपने हितों को समझते हुए निर्णय लेना।

इसका दूसरा प्रमुख बिंदु है अर्थव्यवस्था संचालित कूटनीति। जैसे वर्तमान में भारत की विदेश नीति देश के आर्थिक हितों को बहुत महत्व दे रही है। वास्तव में प्रमुख वैश्विक शक्तियों को देखा जाए तो वे अपनी विदेश नीति में आर्थिक पक्ष को सर्वोपरि रखती हैं, जैसे कई विदेशों के सर्वोपरि नेता प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति इत्यादि विदेशों में जाकर अपने देश के उत्पादों व प्राइवेट कंपनियों को आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं। इसके साथ ही स्वतंत्रता के पूर्व और उसके बाद के दौर में हुए अनेक वैश्विक आर्थिक बदलावों से सबक लेते हुए भारत ने संरक्षणवादी बाजार पद्धति को त्याग कर समावेशी वैश्वीकरण को स्वीकार किया है।

इस नई विदेश नीति का तीसरा महत्वपूर्ण बिंदु है बहुध्रुवीय वैश्विक क्रम को स्वीकार करना व इसकी पैरवी करना। भारतीय विदेश नीति की सफलता को हम इस रूप में देख सकते हैं कि रूस–युक्रेन के युद्ध के समय उसने परस्पर विरोधी वैश्विक खेमों में भी अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराते हुए एक वैश्विक साम्य स्थापित किया है। ऐसे तनावपूर्ण समय में भी भारत ने शंघाई कॉरपोरेशन एवं क्वाड आदि समूहों में प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज कराई है। शंघाई कॉरपोरेशन रूस व चीन वाले पक्ष का मंच है जबकि क्वाड अमेरिका द्वारा चीन की घेराबंदी करने के लिए बनाया गया संगठन है। रूस–युक्रेन युद्ध के इस दौर में, भारत एक ओर जहाँ पश्चिमी देशों के दवाब के आगे न झुककर अपने हितों के अनुसार रूस से व्यापार बढ़ाता जा रहा है, वही दूसरी ओर वैश्विक मंचों पर रूस को नसीहत देने से भी नहीं चूकता कि यह दौर युद्ध का नहीं है।

इसका चौथा बिंदु उचित जोखिम है। यह इतिहास का विषय है कि जोखिम वाली विदेश नीतियों ने कम लाभ दिया है। ऐसे में जब भारत को विश्व पटल पर तेजी से आगे बढ़ना है, तो जोखिम तो उठाना ही होगा। आज भारतीय विदेश नीति उचित जोखिम उठानें में व बड़ी वैश्विक शक्तियों के दवाब के आगे भी अपना हित आगे रखने में नहीं हिचकिचाती। बीते कुछ समय से भारत अपनी कूटनीति व दृढ़ता से संयुक्त राष्ट्र में सुधार के लिए विश्व शक्तियों पर दबाव बना रहा है और काफी हद तक इसमें सफल भी रहा है। इस मुद्दे पर विश्व के अधिकांश देश भारत के साथ खड़े हुए दिखते है। भारत अपनी बढ़ती हुई आर्थिक शक्ति, विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र होना और एक उभरते हुए तीसरे ध्रुव के प्रमुख नेता होने के बिन्दुओं को अपने पक्ष में प्रदर्शित कर, स्वयं के लिए सुरक्षा परिषद् में वीटो की मांग के लिए शक्तिशाली देशों पर लगातार दबाव बना रहा है। और वही दूसरी ओर वीटो पावर जैसे भेदभाव वाले नियमों को अन्यथा पूरी तरह से हटाने की पैरवी करके कूटनीतिक रूप से शेष देशो को अपने पक्ष में खड़ा कर रहा है जिससे वैश्विक शक्तियों पर भारत के पक्ष में दबाव बन रहा है।

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

पांचवा बिंदु है वैश्विक परिस्थितियों के अनुसार निर्णय। वैश्वीकरण के परिदृश्य में एक अच्छी विदेश नीति उसे माना जाएगा जिसमें दूरगामी वैश्विक संभावनाओं, उचित जोखिमों एवं प्रतिफल की वैश्विक स्तर पर अच्छी समझ हो। वैश्विक समझ के अभाव में बनाई गई नीतियां उस देश के लिए अहितकारी हो सकती हैं। आज भारतीय विदेश नीति की वैश्विक स्तर पर सराहना होती है। विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर विश्व के प्रमुख कूटनीतिज्ञों में माने जाते हैं। यहाँ तक कि पाकिस्तान जैसे विरोधी देश के नेता भी भारत की रूस–युक्रेन युद्ध में संतुलित नीति की यदा कदा प्रशंसा करते हुए दिख जाते हैं।

विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर की अगुआई में विदेश मंत्रालय भारत की कूटनीतिक शक्ति को लगातार मजबूत करने का प्रयास कर रहा है। बीते दिनों मंत्री डॉ. जयशंकर ने कहा, ''आने वाले समय में भारतीय राजनयिक भारत की वैश्विक पहचान एवं हितों को ओर अधिक मजबूती से विश्व मंच पर रखते हुए दिखेंगे। ऐसे भारतीय राजनयिक भारत के बड़े लक्ष्यों की पूर्ति करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगे।''

विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर परिवर्तनशील विश्व में भारत के बढ़ते वर्चस्व के लिए सरकार की नीतियों एवं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को श्रेय देते हैं। श्री मोदी ने ही जयशंकर जैसे प्रतिभाशाली व्यक्ति पर विश्वास जताकर, उन्हें विदेश मंत्री के पद की जिम्मेदारी देकर, इस बदलाव को गति दी है, और अब भारत अपनी पहचान हाथी की जगह शेर के रूप में बना रहा है।

ये कैसा पक्षपाती वैश्विक तंत्र है जहां पिछले ७५ सालों से ५ देश संस्थागत रूप से, मनमाने तरीके से, संयुक्त राष्ट्र के प्रस्तावों को एक तरफा खारिज करवा सकते है और विश्व के बाकी बचे देश कुछ नहीं कर सकते। यही वीटो पावर है, जो सिर्फ संयुक्त राष्ट्र में सुरक्षा परिषद के पांच स्थायी सदस्यों को दी गयी है। ये देश यानि कि अमेरिका, रूस (पूर्व में सोवियत संघ), ब्रिटेन, फ्रांस और चीन संयुक्त राष्ट्र के किसी भी प्रस्ताव को, वीटो शक्ति (Veto Power) का उपयोग कर, खारिज करवा सकते हैं।

जैसे समय समय पर चीन वीटो पावर का दुरूपयोग करके आतंकवादी मसूद अजहर को बचाता रहता है और इसकी कोई जवाबदेही भी नहीं है। वर्तमान रूस–यूक्रेन संकट में रूस के विरुद्ध पश्चिमी देशों की संयुक्त राष्ट्र के स्तर पर लामबंदी को रूस वीटो के सहारे अकेला ही निष्प्रभावी कर रहा है। अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस भी अपने हितानुसार यदा–कदा वीटो पावर के द्वारा संयुक्त राष्ट्र पर नकेल कस देते हैं। इसके विपरीत, विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र, पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और सवा करोड़ लोगों का राष्ट्र भारत वीटो विहीन है। ये स्थिति वैश्विक लोकतंत्र की अवधारणा के बिलकुल विपरीत है।

पर अब ऐसा लगता है कि भारत इस स्थिति को और इस वैश्विक पक्षपात को और अधिक सहन करने के मूड में नहीं है। भारत मुखर तरीके से इस मुद्दे पर कूटनीति कर रहा है और बिना हिचकिचाहट के इन स्थायी सदस्यों को घेर रहा है, क्योकि शायद यही सही समय है जब भारत की सबको जरूरत है। भारत एक बड़ी ताकत के रूप में स्थापित हो रहा है और सभी भारत को अपने पक्ष में रखना चाहते हैं। भारत भी बड़ा कूटनीतिक दांव खेल चुका है कि – **या तो भारत को वीटो पावर दो या फिर इस पक्षपाती वीटो पावर का नियम ही हटाओ।**

भारत इन परस्पर विपरीत सुझावों को भी अपनी कूटनीतिक समझ और दमदार विदेश नीति के बल पर आगे बढ़ाने में सफल प्रतीत हो रहा है। एक तरफ जहां स्थायी सदस्य भारत के सामने दवाब में आ रहे हैं और वहीं बाकी तमाम छोटे छोटे देश, जिनके हितों को कोई उचित प्रतिनिधित्व नहीं मिल रहा है, वो इस मुद्दे पर भारत के साथ खड़े दिखाई दे रहे हैं।

– सारिका सक्सेना

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

मैंने तो कर दिया है... क्या आप भी... ?

कहते हैं कि युवा पीढ़ी गलत दिशा में जा रही है, पर साथ साथ हम ये भी देखते हैं कि हमारे चारों तरफ जितनी भी विसंगतियां हों पर कोई ना कोई अपने अच्छे कार्यों का प्रभाव डालता ही है।

इसी तरह सुमार्ग पर चलकर कुछ लोग समाज हित के लिए बेहतर कार्य कर रहे हैं। एक तरफ हमें आसानी से देखने को मिल जाता है कि राजनेताओं के पुत्रों का व्यवहार जनता के साथ किस तरह का होता है, लेकिन एक तरफ केन्द्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर के सुपुत्र देवेन्द्र प्रताप सिंह तोमर (रामू भईया) निरंतर ग्वालियर एवं चंबल संभाग में समाज के लिए बेहतर कार्य करते हुए दिखाई देते हैं, चाहे शहर भर में साहित्यिक गतिविधि हो या अन्य कोई काम हो।

इसी क्रम में देवेन्द्र प्रताप सिंह तोमर एवं उनके साथियों ने चित्रकूट के सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय में नेत्र दान कर कविता के माध्यम से जनमानस को भावनात्मक संदेश देते हुए कहा कि –

हां, मैंने नेत्र दान कर दिया
किसी और की अमानत हो गई ये आँखें
सोये सपनों में जान भर दिया
हां, मैंने नेत्र दान कर दिया
मेरा धर्म है सम्हाल के रखूं अमानत को
सलामती का इंतज़ाम कर दिया
हां, मैंने नेत्र दान कर दिया
तन्हाई में अश्कों की बारिश हुई
काले बादल में उजला चाँद कर दिया
हां, मैंने नेत्र दान कर दिया
सूखे खेतों मे हरियाली आई न थी
उन खेतों में धान कर दिया
हां, मैंने नेत्र दान कर दिया
जिनका, दुनिया देखने को भूखा था मन
सपनों के भट्ठी में नान कर दिया
हां, मैंने नेत्र दान कर दिया
जाने के तुरंत बाद आएंगे आई बैंक वाले
सबके सामने ये ऐलान कर दिया
हां, मैंने नेत्र दान कर दिया
अंतिम इच्छा के साथ गर कर दिया रुख़सत
विकास को तुमने मेहरबान कर दिया
हां, मैंने नेत्र दान कर दिया
जाने के बाद भी देखूँगा
इस सुन्दर धरा को
इन आँखों को ऐसे महान कर दिया
हां, मैंने नेत्र दान कर दिया।

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

ये भावनात्मक संदेश आज के युवाओं को प्रेरित करता है कि जीते हुए तो हम लोगों के लिए कार्य करते ही हैं, परन्तु हमें अगर एक मनुष्य का जीवन मिला है तो हम जितना भी इस मनुष्यता के लिए करें वो कम ही है। नेत्र दान कर रामू भईया एवं उनके साथियों ने जनता को संदेश दिया है कि हमारे पृथ्वी से जाने के बाद भी, हमारे कारण अगर किसी के जीवन में रंग भरा जा सकता है, किसी के जीवन को फिर से हरा भरा किया जा सकता है, किसी को जीवन के प्रति फिर से उत्साहित किया जा सकता है, और किसी के जीवन को फिर से सपनों से भरा जा सकता है, तो ये हमारा मानव धर्म भी है और समाज के प्रति कर्तव्य भी है।

ऐसे ही व्यक्तित्व आज के समाज में संतुलन बनाने का कार्य कर रहे हैं। समाज को ऐसे व्यक्तित्वों से जरूर प्रेरणा लेना आवश्यक है। जिससे कि हम इस समाज को एक नया आकार, मानवता के प्रति जागरूकता, मनुष्यता के प्रति संवेदनशीलता एवं सेवा का भाव दे सकें। एवं एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकें, और आगे आने वाली पीढ़ी को एक बेहतर समाज दे सकें। और बड़ी खुशी की बात है कि देवेन्द्र सिंह तोमर (रामू भईया) इस कार्य में अपना भरपूर योगदान दे रहे हैं।

प्रेरणा...

गौरव श्रीवास्तव जी ने नेत्र दान के मौके पर अपनी माँ को याद करते हुए कहा कि –

मेरी माँ के आँखों में कैन्सर था और उनका इलाज मुंबई के टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल में वर्ष 1993 से 2003 तक चला। 2003 में उनके शांत होने पर मैंने आँखे दान करने का सोचा था, पर ऐसा अभी तक कोई अवसर नही मिला। लेकिन मैं आज धन्यवाद देना चाहूँगा भाई देवेन्द्र प्रताप सिंह तोमर का कि आज, जब हम सभी लोग चित्रकूट में सदगुरु सेवा संस्थान नेत्र चिकित्सालय थे, तो सबसे पहले रामू भाई ने नेत्र दान के लिए फार्म अंकित किया। तब मुझे ध्यान आया कि मुझे भी यह कार्य करना है।

जब नेत्र दान के लिए फार्म भरा तो उसके उपरांत काफ़ी शांति एवं सुकून का एहसास हो रहा है। और सभी से आग्रह करना चाहूँगा कि कुछ ऐसा दान करना चाहिए जिसका लाभ स्वयं के इस दुनिया से जाने के बाद अन्य परिवारों में रोशनी दे सके।

कई बार होता है कि हम जीवन में कुछ भी प्राप्त कर लें पर हमें वह मन की शान्ति नहीं मिल पाती है, जो शान्ति केवल इस समाज को कुछ बेहतर देकर ही मिल सकती है। माँ और पुत्र का रिश्ता इस धरती का सबसे सुंदर और पवित्र रिश्ता होता है। माँ के लिए कुछ करना हर पुत्र की इच्छा होती है। नेत्र दान करके गौरव श्रीवास्तव जी ने अपनी माँ के लिए स्नेह भरी श्रद्धांजली अर्पित की है। इस कार्य से, ऐसे पुत्र पर उनकी माता को भी गर्व होगा, जिसने किसी के जीवन में सपने भरने का कार्य किया है।

– दीपक शर्मा

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

श्रीलंका : कर्ज चुकाते बंदर

आर्थिक संकट और विदेशी कर्ज किसी देश को अमानवीय फैसले लेने पर भी विवश कर सकता है और इस परिस्थिति में वह ऐसा करने के लिए तर्क भी खोज लेता है। यह संभावना व्यक्त की जा रही है कि आर्थिक संकट में फंसे श्रीलंका ने एक अप्रत्याशित फैसला लिया है कि बंदरो की एक लुप्तप्राय प्रजाति चीन को निर्यात की जाएगी। मुख्य विषय यह नहीं है कि बंदरों को निर्यात किया जा रहा है, बल्कि वह संख्या है जो कि चिंता का विषय है। श्रीलंका ने खुलासा किया है कि वह अपने देश से एक लाख बंदरों को चीन ले जाने की संभावना पर विचार कर रहा है।

श्रीलंका के कृषि मंत्री महिंदा अमरवीरा ने कहा कि चीन ने चीन में चिड़ियाघरों के लिए एक लाख टॉक मकैक प्रजाति के बंदर मांगे हैं। पर चीन की छवि देखते हुए चीन की यह बात विश्वास करने योग्य नहीं है। चीन पूर्व में भी दवाई और मांस के लिए, कर्ज में फंसे पाकिस्तान से बड़ी संख्या में गदहों का आयात कर चुका है। अमरवीरा ने एक इंटरव्यू के दौरान बताया कि श्रीलंका अपने एक लाख बंदरों को चीन को निर्यात करने की तैयारी कर रहा है। गौरतलब है कि श्रीलंका आर्थिक तंगी के दौर में फंसा हुआ है।

बन्दर अन्य जानवरों की तुलना में मानव से काफी ज्यादा समानता रखते है। उनमें कुटुंब के प्रति प्रेम व अन्य मानवीय मूल्य बहुतायत में होते हैं। किसी एक बन्दर के पकड़ लिए जाने पर पूरे समूह में दुःख व्याप्त हो जाता है। अतः इस प्रकार से इतने बड़े स्तर पर बंदरों को पकड़ कर चीन को निर्यात करना अत्यंत अमानवीय कदम है जिसकी निंदा की जानी चाहिए।

टॉक मकैक बंदर श्रीलंका की स्थानीय प्रजाति है, जहां स्थानीय रूप से इसे 'रिलेवा' के नाम से जाना जाता है। भले ही यह श्रीलंका में संरक्षित नहीं है परंतु बंदरों की यह प्रजाति अंतर्राष्ट्रीय संघ (आई. यू. सी. एन) की लाल सूची में लुप्तप्राय के रूप में वर्गीकृत है। इस वजह से इतनी बड़ी संख्या में बंदरों को निर्यात करने को लेकर पर्यावरणविद् भी चिंता में हैं। इसका पर्यावरण समर्थित समूहों ने विरोध किया है। श्रीलंका के कृषि विभाग को यह निवेदन भेजा गया है।

चीन के एक प्रतिनिधिमंडल ने श्रीलंका के कृषि मंत्री महिन्द्रा अमरावीरा से कहा है कि कोलंबो 1 लाख मकैक बंदर उसे दे दे। चीन ने कहा कि वह इन बंदरों को पकड़ने का पूरा खर्च उठाएगा। हालांकि चीन का दावा है कि इन बंदरों को वह

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

चिड़ियाघरों में रखेगा। वहीं ब्रिटिश मीडिया का कहना है कि चीन 1 लाख बंदरों का इस्तेमाल अपनी खतरनाक वायरस और दवाएं बनाने वाली लैब में कर सकता है। इसीलिए श्रीलंका के इस फैसले की कड़ी आलोचना हो रही है। चीन अपनी इन कुख्यात लैब में बंदरों पर दवाओं, वैक्सीन, ट्रांसप्लांट, और मस्तिष्क तथा अन्य अंगों से जुड़ी संक्रामक बीमारियों से जुड़ा शोध करता है। इन बंदरों को इसलिए चुना जाता है क्योंकि वे काफी हद तक इंसानों से मिलते जुलते हैं।

हालांकि श्रीलंका लगभग सभी जीवित जानवरों के निर्यात पर प्रतिबन्ध लगाता है। पर भयंकर आर्थिक संकट से जूझ रहे श्रीलंका ने इस साल अपनी संरक्षित सूची से कई प्रजातियों को हटा दिया था जिसमें बंदर प्रजातियाँ भी शामिल हैं।

श्रीलंका सरकार ने बंदरों को भेजने पर सहमति तो जताई है, लेकिन अपने बचाव में सरकार का कहना है कि वह एकसाथ बंदरों को नहीं भेजेगी। श्रीलंका की सरकार के इस फैसले की वजह बंदरों की बढ़ती संख्या का फसलों पर बुरा असर बताया जा रहा है और बहुत से लोग इसे सरकार की खस्ताहाल अर्थव्यवस्था से जोड़ कर देख रहे हैं।

एक बात और कि बंदरों के लिए यह मांग चीन से अधिकारिक तौर पर न आकर किसी चीनी कंपनी के माध्यम से आयी है और जबकि चीन ने अधिकारिक तौर पर इस डील की जानकारी होने से इनकार किया है। यानि कि सीधी जिम्मेदारी व प्रश्नों से अभी के लिए अपना पल्ला झाड़ लिया है। इस फैसले को लेकर कोलम्बो में मौजूद चीनी एम्बेसी ने कहा कि वह इस मामले को लेकर किसी तरह की जानकारी नहीं रखते हैं।

हमारी भारतीय संस्कृति में बंदरो का एक विशेष स्थान व सम्मान तो है ही। पर श्रीलंका में भी कुछ समुदायों में व बौद्धों में बंदरों को श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है। चीन में भी मंकी गॉड के रूप में सम्मान होता है। पर आर्थिक स्वार्थ और कर्ज के मायाजाल के सामने सारी संवेदनाये, श्रद्धा पीछे छूटती हुई दिखाई देती है।

हालांकि यह भारत का आन्तरिक मुद्दा नहीं है, लेकिन भारत जो कि वैश्विक और जिम्मेदार शक्ति है एवं वसुधैव कुटुंबकम की भावना के साथ मानवीय मूल्यों का समर्थन करता है, ऐसे भारत को इस मुद्दे पर इस डील के विरुद्ध दबाव बनाना चाहिए। ताकि इतनी बड़ी संख्या में बंदरो को उनके परिवार से अलग करके चीन की अमानवीय प्रयोगशालाओं में न भेजा जाए।

– अजय सक्सेना

ये धरती, ये प्रकृति, ये जंगल, इन जानवरों के भी हैं। और अगर लोगों में संवेदनाएं हैं तो फिर क्या सरकारों को ऐसे निर्णयों के विरुद्ध बाध्य नहीं किया जा सकता?

प्रगति सोपान पत्रिका इस विषय पर संवेदनशील पर्यावरण प्रेमियों के साथ खड़ी है और आम जन से भी अनुरोध करती है कि वो श्रीलंका में वानर जाति पर इतने गंभीर संकट के विरुद्ध भारत में भी एक माहौल बनाएं। आज जब पूरा विश्व सोशल मीडिया के द्वारा जुड़ा हुआ है, तो इस प्रकार की मुहिम का प्रभाव देश की सीमाओं के बाहर भी अवश्य होगा। आपके द्वारा व्यक्त किया गया एक विचार, कई अन्य लोगों की प्रतिध्वनि से गूंजते हुए, विरोध के स्वर को तेज करेगा।

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

पृथ्वी और पर्यावरण

पर्यावरण पर आधारित राष्ट्रीय हिन्दी पत्रिका

२००३ से प्रकाशित

पंजीयन संख्या : M.P./HIN/2003/10701

केदार सिंह कंसाना
पूर्व अध्यक्ष
लोक सभा युवा काँग्रेस
ग्वालियर

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

महिलाओं को स्वावलंबी बनाती सरकारें...

हमारे देश में महिलाओं की दशा एवं उनके विकास को लेकर हमेशा से ही एक महत्वपूर्ण मुद्दा बना हुआ है। चाहे वह महिला पुरुष लिंग अनुपात, महिला शिक्षा या फिर समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति के रूप में ही क्यों ना नजर आता हो।

भारत में नारी को देवी के रूप में देखा गया है। कहा जाता है कि जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। प्राचीन काल से ही यहां महिलाओं को समाज में विशिष्ट आदर एवं सम्मान दिया जाता है।

हमारे देश में महिला प्रतिभा की कमी नहीं है। जब जब उन्हें मौका मिला है उन्होंने खुद को श्रेष्ठ साबित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। चाहे वह राजनैतिक क्षेत्र में हो, सामाजिक क्षेत्र में हो या फिर व्यापार के क्षेत्र में, महिलाओं ने सदैव ही अपने उत्कृष्ट कार्यों से खुद को सिद्ध किया है। आज महिलाएं इस विकासशील भारत को विकसित बनाने के लिए अपना हर संभव योगदान कर रही है । हमारे देश में महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार है। महिलाएं देश की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं तथा विकास में भी बराबर की भागीदार हैं। आज के युग में महिला, पुरुषों के साथ ही नहीं बल्कि उनसे दो कदम आगे निकल चुकी है।

देश व समाज में महिलाओं की आर्थिक व सामाजिक स्थिति को सुधारने के उद्देश्य से प्रत्येक सरकारें चाहे वह केंद्र की हो या राज्य की, सदैव से ही अपने अपने स्तर पर भरपूर प्रयास करती आ रही हैं। सरकारें विभिन्न योजनाओं के सहारे महिलाओं को सशक्त बनाने के उद्देश्य से कार्य कर रही हैं।

बीते दिनों मध्य प्रदेश सरकार ने महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक अत्यंत ही प्रभावकारी योजना को प्रारंभ किया है "लाड़ली बहना योजना"। इस योजना की शुरुआत मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के द्वारा 28 जनवरी 2023 को नर्मदा जयंती के अवसर पर मध्य प्रदेश के सीहोर जिले से की गई है। यह योजना मध्य प्रदेश राज्य की महिलाओं के कल्याण के उद्देश्य से चलाई गई अत्यंत प्रभावकारी और आदर्श योजना है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य मध्यप्रदेश में महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक एवं पारिवारिक स्थिति को मजबूत बनाना है। इस योजना के अंतर्गत मध्यप्रदेश राज्य में निवासरत प्रत्येक मध्यम एवं निम्न वर्गीय महिलाएं जो कि 23 वर्ष से अधिक व 60 वर्ष से कम आयु की हैं, उन्हें प्रतिमाह 1000 रुपए की मासिक आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी जोकि सीधा महिलाओं के बैंक खातों में

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

जमा होगी।

इस आर्थिक सहायता के माध्यम से ऐसी महिलाएं, जो आर्थिक रूप से अपने पति व परिवार पर निर्भर रहती हैं, उन्हें कुछ हद तक आत्मनिर्भर एवं स्वाबलंबी जीवन का अनुभव होगा। वे इस आर्थिक सहायता के माध्यम से छोटे–मोटे कुटीर उद्योग प्रारंभ करके स्वयं का एवं अपने परिवार का भी पालन पोषण कर सकती हैं। वे पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त होकर स्वयं व्यक्तिगत रूप से तो सशक्त होंगी ही साथ ही अपने परिवार, समाज, राज्य व देश सभी के सशक्तिकरण में योगदान देंगी।

मध्य प्रदेश सरकार पूरे देश में महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में एक आदर्श सरकार के रूप में जानी जाती है। मध्य प्रदेश सरकार से प्रभावित होकर कई राज्य सरकारें अपने राज्य क्षेत्र में इन योजनाओं को प्रारंभ कर चुकी हैं जोकि मध्य प्रदेश सरकार के लिए एक गौरवान्वित करने वाली बात है। मध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण के लिए कई प्रकार की योजनाएं इससे पहले भी चलाई जा रही हैं। जैसे कि बालिकाओं के लिए लाड़ली लक्ष्मी योजना, गांव की बेटी योजना, मुख्यमंत्री महिला सशक्तिकरण योजना, जननी सुरक्षा योजना, मुख्यमंत्री अविवाहिता पेंशन योजना, मुख्यमंत्री कन्या विवाह/निकाह योजना, वृद्धा पेंशन योजना, मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना, स्कूटी वितरण योजना एवं अन्य कल्याणकारी योजनाएं जो मध्य प्रदेश सरकार बरसों से महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य से प्रदेश भर में चला रही है।

कई लोग इन योजनाओं को राजनीतिक दृष्टिकोण से भी देखते हैं। उनका मानना है कि यह योजनाएं चुनावों के समीकरण बदलने का एक महत्वपूर्ण जरिया है। तो इसमें कोई दो राय नही किं भले ही यह योजनाएं मतदान को प्रभावित करने का जरिया हो, या फिर कोई इन्हें राजनीतिक दृष्टिकोण से भी देखता है, तो वह सही है क्योंकि राजनीति का कर्तव्य ही है लोक कल्याण। और यह योजनाएं लोक कल्याण, महिला कल्याण एवं महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य से बेहतर कार्य कर रही हैं और इनके बेहतर परिणाम देखने को मिल रहे हैं। इन योजनाओं के माध्यम से ही मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान प्रदेश भर में भैया और मामा के रूप में प्रसिद्ध तो हैं हीं साथ ही उन्होंने ना सिर्फ पूरे मध्य प्रदेश में, बल्कि संपूर्ण देश में अपनी छवि एक नारीवादी चिंतक के रूप में बनाई है। साथ ही भारत में महिला सशक्तिकरण व कल्याण के लिए चलाई जा रही सर्वाधिक योजनाओं के संचालन वाले मुख्यमंत्री के रूप में भी उभर कर सामने आए हैं।

– **भूपेन्द्र चौहान**

भारतीय नायक : बाबा साहब

ये बात उस समय की है जब देश की संसद संविधान की भूरी–भूरी प्रसंशा से महक रही थी। सभी डॉ. भीमराव अम्बेडकर की तारीफ पे तारीफ किए जा रहे थे और तभी डॉ. साहब से आग्रह किया गया कि वह अपने द्वारा निर्मित संविधान पर कुछ शब्द कहें। बाबा साहब बड़ी सहजता के साथ खड़े हुए और बोले कि संविधान कितना ही अच्छा क्यों न हो वो अंततः बुरा ही साबित होगा यदि उसे इस्तेमाल में लाने वाले लोग बुरे होंगे और संविधान कितना ही बुरा क्यों न हो वो अंततः अच्छा ही साबित होगा यदि उसे इस्तेमाल में लाने वाले लोग अच्छे होंगे।

बाबा साहब के इन शब्दों को पढ़कर मैं एकाएक चौंका और इन शब्दों के पीछे छुपी उनकी बेबसी और चिंता को साफ तौर पर महसूस भी कर

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

पाया। उनका यह कथन मानव समाज और राष्ट्र की उन्नति व उत्थान के लिए लिखे गए नियमों और सिद्धांतों की लाचारी और विवशता पर से पर्दा उठाने का काम कर गया।

हम बड़ी आसानी से कह देते हैं कि ये नियम–क़ानून गलत है, ये सिद्धांत गलत है या ये धर्म गलत है पर कभी ये जानने का प्रयास नहीं करते कि क्या ये वाकई गलत है या फिर ये गलत लोगों के हाथ में जाने के बाद गलत तरह से काम कर रहा है।

मैं यहाँ कुरीतियों और रुढ़ियों को दूर रखकर मात्र उन सभी पुस्तकों में लिखे गए मानव उत्थान और विकास के सूत्रों की पैरवी कर रहा हूँ जो गलत नहीं थे और न ही गलत मंशा से लिखे गए थे पर जब वह गलत लोगों के हाथ आए तो गलत हो गए। जैसे कि बाबा साहब द्वारा राष्ट्र कल्याण की भावना से लिखे गए संविधान को भी आज देश के भीतर कुछ कुटिल क़ानून के जानकारों द्वारा गलत तरह से उपयोग करके अपना हित साधा जाता है। और तो और राजनीति भी बड़ी ही चालाकी से संविधान का प्रयोग अपनी सत्ता को बनाये रखने में करती आई है। इस देश में क़ानून व्यवस्था का मानना है कि भले ही सौ अपराधी छूट जाएं पर किसी एक बेगुनाह को सज़ा न हो लेकिन कितनी अजीब बात है कि इस देश की जेलों में फिर भी न जाने कितने बेगुनाह सज़ा काट रहे हैं। क्या इसलिए इस देश में क़ानून बनाया गया था? क्या इसी भावना के साथ बाबा साहब ने संविधान की रचना की थी? नही।

भोजन कितना ही स्वादिष्ट और शुद्ध क्यों न हो पर यदि उसे किसी गंदे पात्र में डाला जाएगा तो वह भोजन भी गंदा ही हो जाएगा। ठीक इसी तरह धर्म, सिद्धांत, नियम, क़ानून चाहे कितने ही बेहतर और लोक कल्याणकारी क्यों न हो, यदि उनका उपयोग एक निकृष्ट, हीन और दुष्ट व्यक्ति करेगा तो वह सभी सूत्र लोक कल्याणकारी न होकर लोक विनाशकारी होंगे। जैसे चाकू एक ही होता है पर जब वो अलग–अलग मानसिकता के लोगों के हाथ आता है तो कार्य भी अलग–अलग करता है। डॉक्टर के हाथ में आएगा तो जान बचाने के लिए चलेगा और जब किसी अपराधी के हाथ आएगा तो जान लेने का कार्य करेगा।

बाबा साहब की जयंती पर उनके इस कथन को आधार बनाते हुए बस इतना कहना चाहता हूँ कि किसी भी व्यक्ति को लकीर का फकीर नहीं होना चाहिए। उसे जानकार के साथ–साथ विवेकी भी होना चाहिए। जिस समाज में लोग नैतिक नहीं, संवेदनशील नहीं, पवित्र नहीं, चरित्रवान नहीं तो फिर उन्हें कितने ही उत्कृष्ट सूत्रों से भरे संविधान या धर्म ग्रंथ दे दिए जाएँ वो उनका उपयोग गलत तरह से ही करेंगे।

अतः ध्यान, योग, आत्मावलोकन और स्वाध्याय के बिना न तो किसी व्यक्ति की पूर्ण उन्नति हुई है और न ही हो सकती है। गौतम बुद्ध जीवन पर्यन्त लोगों को प्रेम, करुणा, दया और शांति का उपदेश देते रहे क्योंकि जब तक व्यक्ति के भीतर नैतिकता और संस्कारों का विकास नहीं होगा तब तक वह व्यक्ति परिवार और समाज दोनों के लिए हानिकारक है। कुटिल,चालाक, धूर्त और असंवेदनशील व्यक्ति से सदाचार व लोक कल्याण के कार्यों की अपेक्षा करना बिल्कुल वैसा ही है जैसे बंजर जमीन पर बीज डालकर पौधा उगाने का व्यर्थ प्रयास।

मित्रो! अविवेकी, रूढ़िवादी और अज्ञानता से भरे समाज को उसके विकास व उत्थान के लिए चाहे कितनी ही ज्ञान और नियम–क़ानून से भरी पुस्तकें दी जाएं वो सब अंततः बहुत लाभप्रद सिद्ध नहीं होंगी जब तक कि समाज के लोग स्वयं को नहीं बदलते।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर "बाबा साहब" के जन्मदिन पर आप सभी को अनंत शुभकामनायें एवं बधाई।

– पं. अंकित शर्मा

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

प्रदेश की राजनीति में ग्वालियर चम्बल संभाग की भूमिका

किसी भी देश प्रदेश जिले या क्षेत्र की प्रासंगिकता वहां की राजनीतिक गतिविधियों से तय होती है हमारे देश भारत में भले ही साक्षरता के प्रसार की अभी बहुत जरूरत हो लेकिन फिर भी इस बात पर संतोष जताया जा सकता है कि आम आदमी राजनीतिक तौर पर बेहद जागरूक है। गली मोहल्लों में होने वाली बातचीत में राजनीतिक विषय अमूमन छाए रहते हैं। राजनीतिक दलों की नीतियों एवं सक्रियता पर खुलकर चर्चा जनमानस के बीच में अधिकतम समय होती रहती है चाहे वह चौराहों पर लगे जमघट में हो या गांव की चौपालों की नीचे या फिर चलती रेलगाड़ी में अनजान यात्रियों के बीच!

राजनीतिक विषयों की ज्यादातर चर्चा आम जनमानस में पाई जाती है। आम आदमी किसी न किसी रूप से राजनीतिक दल और विचारधारा से प्रभावित होता है वह या तो इसका पक्षधर होता है या आलोचक। राजनीतिक दलों से पूरी तरह मायूस हो चुके व्यक्ति की भी अपनी एक राजनीतिक चेतना होती है। यही कारण है कि इस विषय पर प्रत्येक व्यक्ति बूढा, वयस्क, बच्चा सबकी विशेष रूचि होती है और यह एक जागरूक लोकतंत्र के लिए बेहद जरूरी भी है।

ग्वालियर चंबल संभाग मध्य भारत का यह क्षेत्र अपनी राजनीतिक सक्रियता में सदैव से ही एक विशिष्ट पहचान रखता है, चाहे वह राज्य सरकार में हो या केंद्र। ग्वालियर चंबल संभाग सदैव से ही राजनीतिक सत्ता के केंद्र में रहा है बात चाहे ब्रिटिश काल की हो या फिर भारतीय लोकतंत्र के 73 साल के इतिहास की मध्यप्रदेश का यह क्षेत्र सदैव भी अपनी विशिष्ट जीवंत उपस्थिति इतिहास में दर्ज कराता रहा है।

ग्वालियर चंबल का क्षेत्र सदैव से ही अपनी राजनीतिक चेतना के लिए अग्रणी माना जाता है। यहां के व्यक्ति की राजनीतिक चेतना का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि यहां हर व्यक्ति को राजनीति में विशेष रुचि होती है। वह किसी ना किसी दल का या तो समर्थक होगा या फिर विरोधी पूरी तरह से मायूस व्यक्ति की भी कोई राजनैतिक चेतना होती ही है। चंबल के क्षेत्र में चुनावों को किसी त्योहार से कम नहीं आंका जाता। यही कारण है की चम्बल की यह धरती जो डकैतों के लिए प्रसिद्ध थी, आज सर्वाधिक राजनैतिक उठा पटक के लिए भी जानी जाने लगी है ।

भारतीय लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाने के लिए ग्वालियर चम्बल की राजनीति और नेतृत्व ने सदैव ही महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन किया है। इसका जीवंत उदाहरण ग्वालियर की राजमाता श्रीमन्त विजया राजे सिंधिया, अटल बिहारी बाजपेयी हैं। इन्हीं महापुरुषों को आदर्श मानकर मध्य भारत का यह क्षेत्र आज राजनीति के जगत में ऊंचे मुकाम पर है यहां से अनेकानेक राजनेता निकले जो केंद्र एवं राज्य की सत्ता में शामिल होकर वैश्विक पटल पर भारत का नेतृत्व कर रहे हैं। जिस कड़ी में नरेंद्र सिंह तोमर, ज्योतिरादित्य सिंधिया, डॉ. गोविंद सिंह, अनूप मिश्रा, जैसे अनेकों राजनेता जिनकी राजनीतिक चेतना एवं बयानों की सराहना न केवल प्रदेश में बल्कि संपूर्ण देश में चर्चा का विषय बनी रहती है।

इन्हीं से प्रेरित होकर वर्तमान में अंचल से अनेकानेक युवा नेता व सामाजिक कार्यकर्ता निकले हैं, जो कि राष्ट्रीय पटल पर ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। जिनमें प्रवीण पाठक जैसे ओजस्वी वक्ता, सतीश सिकरवार जैसे कुशल राजनेता, और युवाओं में देवेंद्र प्रताप सिंह तोमर, तुष्मुल झा, प्रबल प्रताप सिंह तोमर (रघु भईया), युवाओं में लोकप्रिय होने के साथ–साथ राष्ट्रीय पटल पर समाज सेवा को नया आयाम दे रहे हैं।

– भूपेन्द्र चौहान

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

विपक्ष की एकजुट होने की कोशिश में मुश्किलें

यह लाख टके का सवाल है कि विपक्षी एकता का भविष्य क्या है? क्या पार्टियां 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए एकजुट हो पाएंगी? अभी कोई भी जवाब देना जल्दबाजी है लेकिन इस एकता का भविष्य दिखने लगा है। कांग्रेस का राय पर अधिवेशन खत्म होने और पूर्वोत्तर के तीन राज्यों के चुनाव नतीजों के बाद उत्तर प्रदेश से लेकर पश्चिम बंगाल और कर्नाटक से लेकर तेलंगाना तक से जैसी राजनीति की खबरें आ रही हैं उनसे लग रहा है कि विपक्षी पार्टियों की एकता बनाना बहुत मुश्किल काम है. कांग्रेस ने भले रायपुर में विपक्षी एकता की अपील की है लेकिन ऐसा लग रहा है कि प्रादेशिक पार्टियों का कांग्रेस विरोध तेज हो गया है. उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने विपक्षी पार्टियों की एकजुटता का संकेत दिया था।

वे तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन के 70वें जन्मदिन के मौके पर एक मार्च को चेन्नई में थे, जहां सिर्फ उन्हीं पार्टियों का जमावड़ा हुआ था, जो कांग्रेस के साथ तालमेल कर सकती हैं। वहां से लौटने के बाद उन्होंने कहा भी कि सपा विपक्ष के साथ मिल कर चुनाव लड़ेगी। लेकिन उनके कहने के तुरंत बाद उनकी पार्टी के प्रवक्ता राजेंद्र चौधरी की ओर से सफाई दी गई कि सपा सिर्फ अपनी सहयोगी रालोद के साथ मिल कर लड़ेगी।

अब सोचें, अगर सपा और रालोद लड़ते हैं, बसपा ने पहले ही अकेले लड़ने का ऐलान किया है और कांग्रेस अकेले लड़ती है तो भाजपा को कैसा फायदा होगा। उधर पश्चिम बंगाल में कांग्रेस और तृणमूल कांग्रेस का विवाद तेज हो गया है। राज्य की सागरदिघी विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव जीत कर कांग्रेस ने खाता खोला। बंगाल की 294 सदस्यों की विधानसभा में कांग्रेस को पहली सीट मिली। लेकिन उसके तुरंत बाद कांग्रेस नेताओं पर कार्रवाई शुरू हो गई। राज्य की पुलिस ने कांग्रेस प्रवक्ता कौस्तुभ चौधरी को ममता बनर्जी पर बयान देने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। इससे पहले नतीजों के तुरंत बाद बौखलाहट में ममता बनर्जी ने कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अधीर रंजन चौधरी पर हमला किया और उनकी बेटी की मृत्यु का मुद्दा बनाया।

इसे लेकर कौस्तुभ चौधरी ने ममता पर निशाना साधा तो रात तीन बजे ममता की पुलिस कांग्रेस प्रवक्ता को उठा ले गई। ध्यान रहे सागरदिघी सीट मुस्लिम बहुल है और उस पर हार से ममता की चिंता बढ़ी है। सपा और तृणमूल के कांग्रेस विरोध के बीच आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान को लेकर उन राज्यों के दौरे पर निकल गए, जहां अगले कुछ दिन में चुनाव होने वाले हैं। उनका एकमात्र मकसद इन राज्यों में कांग्रेस को नुकसान पहुंचाना है।

इस बीच तेलंगाना के मुख्यमंत्री के० चंद्रशेखर राव 14 अप्रैल को अपने यहां कांग्रेस के अलावा बाकी विपक्षी पार्टियों को जुटाने की तैयारी में लग गए हैं। इसके पूर्व जब डीएमके प्रमुख और तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन के 70वें जन्मदिन पर देश की कई विपक्षी पार्टियों के नेता चेन्नई में जुटे थे। उस जलसे में जुटे सभी नेताओं ने विपक्षी एकता की बात की थी।

विपक्ष की एकजुटता में सबसे बड़ी बाधा नेतृत्व के मसले पर थी, जिसे लेकर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने काफी हद तक स्थिति स्पष्ट कर दी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने कभी नहीं कहा है कि कौन प्रधानमंत्री बनेगा। हालांकि इससे पहले मध्य प्रदेश के अध्यक्ष कमलनाथ कह चुके हैं कि विपक्ष का नेतृत्व राहुल गांधी करेंगे।

पिछले दिनों पार्टी के संचार विभाग के प्रमुख जयराम रमेश ने भी कहा था कि कांग्रेस ही गठबंधन का नेतृत्व करेगी। कमलनाथ और रमेश के कहने से ज्यादा अहम मल्लिकार्जुन खड़गे का बयान है। ध्यान रहे उन्होंने नागालैंड में भी विपक्षी

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

एकता की बात कही थी और चेन्नई में उन्होंने साफ किया कि कांग्रेस विपक्षी गठबंधन का नेतृत्व करने की जिद नहीं कर रही है।

यह बहुत बड़ी बात थी। स्टालिन के जन्मदिन के मौके पर हुए आयोजन की दूसरी बड़ी बात थी समाजवादी पार्टी का कांग्रेस और अन्य विपक्षी पार्टियों के साथ मंच साझा करना। सपा और कांग्रेस के बीच पिछले कुछ समय से तनाव है। 2017 का विधानसभा चुनाव साथ लड़ने के बाद से दोनों पार्टियां अलग अलग हैं। 2019 में सपा ने बसपा के साथ मिल कर लोकसभा का चुनाव लड़ा था और कांग्रेस को अलग रखा था।

सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव चेन्नई में विपक्ष के आयोजन में शामिल हुए इसका विपक्षी एकता के लिए बड़ा महत्व है। जानकार सूत्रों का कहना है कि वे तीसरे मोर्चे की बजाय दूसरे मोर्चे में शामिल होने पर राजी हो गए हैं। दूसरा मोर्चा यानी वह विपक्षी गठबंधन, जिसमें कांग्रेस हो। अब तक माना जा रहा था कि तृणमूल कांग्रेस, भारत राष्ट्र समिति और आम आदमी पार्टी की तरह समाजवादी पार्टी भी तीसरा मोर्चा बनाने के पक्ष में है।

लेकिन अब ऐसा नहीं लग रहा है। क्योंकि तीसरा मोर्चा बनाने की कोशिश करने वाली पार्टियों को स्टालिन के जन्मदिन के आयोजन में नहीं बुलाय गया था। तमाम सद्‌भाव के बावजूद के चंद्रशेखर राव, ममता बनर्जी और अरविंद केजरीवाल को न्योता नहीं दिया गया था, जबकि अखिलेश को न्योता दिया गया और वे शामिल भी हुए।

इसके साथ ही चेन्नई में तीसरे मोर्चे की बात करने वालों की आलोचना की गई। कांग्रेस की बात दोहराते हुए स्टालिन ने कहा कि तीसरा मोर्चा बना तो उससे भाजपा को फायदा होगा। यह केसीआर, ममता और केजरीवाल तीनों को साझा विपक्ष की ओर से मैसेज था। स्टालिन के जन्मदिन के कार्यक्रम से कांग्रेस को साथ लेकर बनने वाले विपक्षी गठबंधन की रूप रेखा स्पष्ट हो गई है।

कांग्रेस के अलावा उसकी सहयोगी डीएमके और राजद इसमें शामिल हैं। फारूक अब्दुल्ला की नेशनल कांफ्रेंस भी इसमें है और एक तरह से अखिलेश यादव ने भी इसमें शामिल होने का संकेत दे दिया है। अगर इन सभी क्षेत्रीय पार्टियों के नेता प्रयास करें और खड़गे की बात को सामने रख कर केसीआर, ममता और केजरीवाल से बात करें तो विपक्ष का बड़ा गठबंधन भी बन सकता है।

विपक्ष के नेताओं ने मिलकर दिल्ली के डिप्टी मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया की गिरफ्तारी का जिक्र करते हुए कहा कि उन पर लगे आरोप पूरी तरह निराधार और राजनीतिक साजिश का हिस्सा हैं।

विपक्षी नेताओं ने असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व शर्मा और टी एम सी के पूर्व नेताओं शुभेंदु अधिकारी और मुकुल रॉय का जिक्र देते हुए दावा किया कि जांच एजेंसी भाजपा में शामिल हुए नेताओं के खिलाफ मामलों में धीमी गति से काम करती हैं। तमिलनाडु, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना के राज्यपालों और दिल्ली के एल जी की ओर इशारा करते हुए, नेताओं ने संवैधानिक प्रावधानों का उल्लंघन करने और राज्य के शासन में बाधा डालने का आरोप लगाया।

प्रधानमंत्री को लिखे पत्र के साथ ही विपक्ष की एकता पर भी फिर सवाल खड़े हो गए। पत्र से कांग्रेस, डीएमके और लेफ्ट ने दूरी बनाकर रखी। सिसोदिया की गिरफ्तारी के बाद दिल्ली कांग्रेस अध्यक्ष अनिल चौधरी और संदीप दीक्षित ने इसका स्वागत किया था। इस बीच, बंगाल में सागरदिघी में हालिया उपचुनाव के बाद कांग्रेस और टीएमसी के संबंध भी तनावपूर्ण हो गए हैं।

ममता ने आरोप लगाया था कि कांग्रेस, भाजपा और लेफ्ट के बीच अनैतिक गठबंधन था और 2024 में टीएमसी अकेले चुनाव लड़ेगी। केसीआर की पार्टी बीआरएस और कांग्रेस भी साथ नहीं हैं। इसके पहले डीएमके चीफ एमके स्टालिन ने तीसरे मोर्चे के विचार को खारिज कर दिया था। पल–पल विपक्षी एकता के समीकरण बदलते रहते है। विपक्षी एकता की पटरी अभी तक टेढ़ी मेढ़ी ही हैं।

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते है।

शोध : भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में हिन्दी साहित्य की भूमिका

डॉ० अमित शर्मा

श्रीमती डॉ० साधना दीक्षित

हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं एवं जगह–जगह सेमिनार, सम्मेलनों के माध्यम से युवा पीढ़ी को क्रांतिकारी आंदोलन से परिचय करवाया जा रहा है।

भारत सांस्कृतिक राष्ट्र है। जीवन के सभी आयामों में भारत की प्रतिष्ठा है। दुनिया के सबमें ज्येष्ठ व छः ऋतुओं वाले श्रेष्ठ देश पर गर्व करने लायक बहुत कुछ है। उत्तरप्रदेश के विधानसभा अध्यक्ष श्री हृदयनारायण दीक्षित जी के अनुसार हम स्वाधीनता के 75 वें वर्ष में प्रविष्ट होकर अपराजेय पौरूष का अमृतफल आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं तो वह समय आत्म चिंतन के आह्वान और बोध जागृत करने का भी है।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में 3 तरीकों से लड़ाई लड़ी गई। एक शस्त्रों से यानी गरमदल के नायकों द्वारा, दूसरा अहिंसक तरीकों से यानी नरमदल द्वारा, तीसरा मोर्चा था साहित्य का जिसमें कलम के जरिये साहित्य के नायकों ने वो ज्वाला जगाई कि देश का हर नागरिक राष्ट्रप्रेम की भावना से जुड़ गया। अंग्रेजों के खिलाफ क्रांति में उतर गया।

पं० जुगल किशोर के संपादन में शुरू हुआ अखबार उदन्त मार्तदण्ड ने जनता में स्वाधीनता के प्रति जागृति उत्पन्न की। गणेश शंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुवेर्दी, मुंशीप्रेमचन्द्र जैसे अधिकांश साहित्यकार क्रांतिकारी लेखन द्वारा देश की स्वाधीनता हेतु युवाओं को प्रेरणा देते थे। स्वयं भी क्रांतिकारी गतिविधियों में संलग्न रहकर नेतृत्व करते थे। कर्मवीर, बेगदूत, अमृत बाजार पत्रिका, सोमप्रकाश, केसरी, हिंदु, मराठा, इण्डियन मिरर आदि पत्रों ने ब्रिटिश हुकुमत की ईंट से ईंट बजाकर राष्ट्रपुत्रों में स्वतंत्रता का बिगुल फूँक दिया। जिससे स्वाधीनता की क्रांति की भावना की चिंगारी प्रबल होकर दावानल बनकर भड़क उठी। समाचार पत्रों के संपादक पत्रकारों को जेल भेजकर यातनाएँ दी जाती थीं।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन भारत की आजादी के लिए सबसे लम्बे समय तक चलने वाला एक प्रमुख आंदोलन था। राष्ट्रीय साहित्य भी राष्ट्रवादी चेतना के लिए महत्वपूर्ण कारक था। सन् 1876 में भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने ''भारत दुदर्शा''' में अंग्रेजों की भारत के प्रति नीति का उल्लेख किया है। पं० प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमधन', जयशंकर प्रसाद, मैथलीशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, बालमुकुन्द गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, श्रीधर पाठक की रचनाओं से भी भारत की आजादी की अलख जगाने वाली जोशीली ज्वाला निकलती थी।

जयशंकर प्रसाद के प्रसिद्ध नाटक चंद्रगुप्त के चतुर्थ अंक के दृश्य 6 से ली गई रचना स्वतंत्रता पुकारती, माखनलाल चतुर्वेदी की 'पुष्प की अभिलाषा', श्यामलाल गुप्त की 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' रचनाओं ने सैनिकों में जोश भरकर क्रांतिकारी बना दिया। सुभद्रा कुमारी की कालजयी कविता 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' ने सैनिकों को क्रांति के लिए उत्प्रेरित किया।

क्रांतिकारियों के मध्य हुए पत्राचार का भी राष्ट्रीय आंदोलन में भारत को स्वाधीन कराने हेतु महत्वपूर्ण योगदान है। पं० रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू, अशफाक

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

उल्ला खाँ, रोशन सिंह सहित अधिकांश क्रान्तिकारी कवि तथा शायर भी थे। जिन्होंने अपने गीत व तरानों का सहारा भी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में लिया था।

आज हम जिस विशाल स्वाधीन भारत में रहते हैं, इसकी कल्पना साहित्यिक क्रान्तिकारियों के बिना संभव नहीं है। रंगमंच ने भी स्वतंत्रता की भावना को प्रबल किया था। कुछ नाटकों से अंग्रेज इतने चिढ़ जाते थे कि मंच पर अभिनय करते हुए कलाकारों को पीट देते थे। क्योंकि अभिनीत नाटक में विद्रोह की भावना अंतर्निहित होती थी। नाटकों को ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रतिबंध झेलने पड़ते थे। अभिनेताओं को ब्रिटिश सरकार का कोपभाजन बनना पड़ता था। फिर भी रंगमंच करने व विचारों के प्रचार–प्रसार का सशंक्त माध्यम बन गया था। फलस्वरूप अंग्रेज सरकार ने नाटकीय प्रदर्शन नियंत्रण अध्यादेश पारित किया, जिसके अंतर्गत किसी भी नाटक में भारत माता आजादी इत्यादी शब्दों पर प्रतिबंध लगा दिया। शिखदल ने मुद्राराक्षस नाटक के द्वारा एकता, संप्रभुता और विद्रोह का संदेश दिया। राष्ट्रीय आंदोलन की चेतना को जाग्रत करने वाले संदेशों को रेखांकित करने के लिए इन नाटकों ने गाने, कविता व छंद संदेशों का प्रयोग होता था। रंगमंच केवल सभागारों तक सीमित नहीं रहा अपितु रंगमंच ने सड़कों पर आकर भारत को आजादी दिलाई।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान तत्कालीन साहित्यकारों ने फिरंगी सरकार की हकीकत को इस ढंग से प्रस्तुत किया कि अशिक्षित भारतीयों में भी ब्रिटिश हुकूमत के अत्याचार के विरूद्ध प्रतिशोध की ज्वाला भड़क गई।

आजादी के अमृत महोत्सव में 'वोकल फोर लोकल' अभियान के द्वारा आत्मनिर्भर भारत के स्वप्न को बढ़ावा देने का प्रयास किया जा रहा है। आजादी के अमृत महोत्सव की सार्थकता तभी है जब हम जाति, पंथ, मज़हब से परे अपने राष्ट्र की उन्नती के लिए निरंतर अनथक प्रयत्न करते रहे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव यानी आजादी की ऊर्जा का अमृत, नए संकल्पों का अमृत, आजादी का अमृत महोत्सव यानी आत्मनिर्भर का अमृत जो स्वतंत्र भारत के सपनों को साकार करने के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

आजादी के अमृत महोत्सव पर भारतीयों के लिए गर्व करने लायक भी बहुत कुछ है, विश्व में भारत का यश बढ़ा है। जीवन के सभी आयामों में हमारी प्रतिष्ठा है। योग और ऋग्वेद को यूनेस्को ने मान्यता दी है। निर्धनता से संघर्ष निर्णायक है। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास बोध आवश्यक है।

एक चिठ्ठी

सम्पादक जी, मैं बच्चों की तरफ से बच्चों का पक्ष रखना चाहता हूँ कि हमारी संस्कृति में तो छोटे बच्चों को भगवान का रूप माना जाता है। भगवान कृष्ण कन्हैया की बाल लीलाओं की तरह ही, छोटे बालकों की शरारतों का आनंद लिया जाता है। लेकिन अब देखनें में आता है कि बच्चों के माता पिता अपनी बड़ी बड़ी आशाओं का सारा बोझ बच्चों पर डाल देते हैं। शिशुओं की छोटी छोटी शरारतों और जिद का आनन्द लेने की बजाय उन्हें "गंदा बच्चा" कहकर लगातार "अच्छा बच्चा" बनने की नसीहत दी जाती है।

विद्वान लोग कहते हैं कि बाल्यकाल सबसे अच्छा समय होता है क्योंकि इस समय कुछ चिंता नहीं रहती और दुनियादारी से ज्यादा मतलब नहीं होता है। इसलिए बच्चों को अपना बचपन चिंतामुक्त होकर, खेल कूद से, मजे करते हुए बिताने देना चाहिए। कुछ शरारतें भी करने दी जानी चाहिए क्योकि शरारतें करने से शिशु अधिक सक्रिय बनते है। और सभी को प्रेम भाव से कृष्ण लीलाओं को पढ़कर वात्सल्य रस जरूर जानना चाहिए।

— यदविन सक्सेना, कक्षा सात

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

धर्म पर आस्था

क़भी किसी तांत्रिक के पास जाते हैं तो क़भी किसी सयाने के चक्कर लगाते हैं, क़भी मज़ारों पर डोरा–ताबीज़ करते हैं तो क़भी कहीं टोना–टोटका और अपना भाग्य पूछते हुए घूमते हैं। आपको पता है ये सब कौन करता है? वो व्यक्ति करता है जिसे अपने आराध्य पर, अपने इष्ट पर भरोसा नहीं होता। यदि मन में अपने इष्ट के प्रति विश्वास नहीं है, समर्पण नहीं है तो फिर हमें जीवन भर भटकना ही पड़ेगा।

हमारी प्रार्थनाओं के पूरा न होने का एक कारण है हमारी आस्था और विश्वास का कच्चापन। हम अपने आराध्य देव पर पूर्ण विश्वास रख ही नहीं पाते। हमारा मन सदैव संशय से भरा ही रहता है। काम होगा भी की नहीं? पता नहीं मैंने सही देवता को अपना इष्ट बनाया है भी कि नहीं? चलो किसी दूसरे देवता को आजमा कर देखते हैं या फिर पड़ोस वाली भाभी बता रही थी कि फलाँ जगह जाने से काम बन जाते हैं। इस तरह से हम जीवन भर भटकते रहते हैं और कई बार तो अपना होता–होता काम भी बिगाड़ लेते हैं क्योंकि किसी भी इष्ट को सिद्ध करने के लिए निरंतर साधना की जरूरत होती है, अटूट श्रद्धा और विश्वास की जरूरत होती है पर हम अपना इष्ट सिद्ध तो करते नहीं बल्कि अपने स्वार्थ के चलते भटकते रहते हैं। एक बात हमें समझना चाहिए कि परमात्मा तो सब जगह है पर उसे ढूंढ़ना पड़ता है। जैसे दूध में मक्खन है पर उसे सतत अभ्यास और प्रयास से मथकर निकालना पड़ता है। इसी तरह परमात्मा हमें प्राप्त है लेकिन अपनी भाव पूर्ण साधना से उसे जागृत करना पड़ता है और जैसे ही हमारा इष्ट जागृत होता है वैसे ही हमारी सभी प्रार्थनाएं निश्चित रूप से स्वीकार होती है।

इसके अलावा एक बात और ठीक से समझने वाली है कि यदि हमारे प्रारब्ध में कुछ विपरीत लिखा है तो दुनियाँ का कोई तंत्र, मंत्र और षड्यंत्र उसे बदल नहीं सकता। यदि हम ये सोचें कि हमें

तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठ मना।

किसी देवी–देवता की जरूरत नहीं, हम तो कर्मकांड और फलाने तांत्रिक, सयाने और दरबार से अपना काम करवा लेंगे तो अभी लिख कर रख लीजिये कि दुनियाँ का कोई भी व्यक्ति या दरबार हमारे कर्मों को और उनके परिणामों को नहीं बदल सकता। आज ऐसे लोगों की दुकाने ही हम जैसे डरे हुए और भक्ति भाव से हीन लोगों की वजह से चल रही हैं। पर हाँ यदि अपने आराध्य देव के प्रति अटूट श्रद्धा है, प्रेम है और उनकी हर रज़ा में राजी रहने को हम तैयार हैं तो हो सकता है कि परमात्मा सभी प्रतिकूलताओं को हमारे अनुकूलता में बदल दें क्योंकि जब भी किसी का प्रारब्ध बदला गया है तो वो केवल भक्ति भावना और समर्पण के आधार पर बदला गया है।

हम और आप दुनियाँ में कहीं भी घूम लें, कितने ही टोने–टोटके करा लें पर जो हमारे कर्मों के आधार पर हमारा प्रारब्ध बना है उसे बदला नहीं जा सकता। सूरदास लिखते हैं कि–

राई घटे न तिल बढ़े जो लिख दी करतार।

परमात्मा के विधान को टालने का सामर्थ्य दुनियाँ के किसी तांत्रिक, सयाने और टोने–टोटके में नहीं है। यदि जीवन से अशुभ को, दु:ख और परेशानियों को कोई दूर कर सकता है तो वो केवल परमात्मा कर सकता है। इसलिए भटकिए नहीं, बार–बार अपना इष्ट मत बदलिए, सम्मान

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

सबका कीजिये पर आराध्य देव एक ही रखिये और उनके प्रति बिना किसी संशय, भ्रम के समर्पित हो जाइये कि प्रभु मेरा जीवन आपको समर्पित है। आप जैसा चाहें मुझे रखें, आपके सुःख और दुःख दोनों मुझे स्वीकार है, मैं आपको छोड़कर स्वप्न में भी किसी अन्य का सहारा नहीं लूंगा,आप ही मेरे सर्वस्व हैं। हे नाथ! मैं आपकी शरण में हूँ मेरी रक्षा कीजिये।

जेहि विधि होई नाथ हित मोरा।
करहीं सौ वेग दास मैं तोरा।।

इस तरह हमें हर पल अपने आराध्य देव को याद करना चाहिए क्योंकि इस तरह पुकारने से और दूसरों का सहारा त्यागने से हो सकता है परमात्मा हम पर रीझ जाएं और हमारे जीवन में सब मंगल कर दें।

प्रबल प्रेम के पाले पड़कर
प्रभु को नियम बदलते देखा।
अपना मान टले टल जाए
भक्त का मान न टलते देखा।।

अतः छोड़ दीजिये दुनियाँ का सहारा और बंद कीजिये ये व्यर्थ के टोने–टोटके क्योंकि जो भी होना यहीं से होना है और यदि यहाँ से नहीं हुआ तो कहीं से नहीं होगा।

– पं. अंकित शर्मा

हरेन्द्र सिंह यादव
प्रदेश कार्यसमिति सदस्य
भारतीय जनता युवा मोर्चा, म.प्र.
मो. 9770386409

मनीष सिंह तोमर

दुष्यन्त सिंह तोमर

अक्कू यादव

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

ऑस्कर का अर्थशास्त्र

भारत में ऑस्कर इस बार विशेषरूप से चर्चा में है, क्योंकि पहली बार किसी भारतीय फिल्म के गाने को सर्वश्रेष्ठ गाने का पुरस्कार मिला है। पहली बार मिला है, इसका यह अर्थ भी हुआ कि अकादमी अवार्ड के 95 वर्षों के इतिहास में इससे पहले एक भी भारतीय गाना ऐसा नहीं था, जिसे पुरस्कार मिलने लायक समझा गया! आश्चर्य! गाने के अलावा कोई फिल्म भी नहीं। ''मदर इंडिया'' में क्या खराबी थी? यही कि ऑस्कर के आकाओं को फिल्म समझ नहीं आई। यही कि एक भारतीय विधवा ने लाला के ऑफर क्यों ठुकरा दिया, यह भारतीय मूल्य उनके गले नहीं उतरा। आज ऑस्कर मिलने पर हम इतरा रहे हैं। इतराना भी चाहिए। लेकिन, मेरी दृष्टि में इसका एक और पक्ष है। इसको ऐसे समझिए–

जिन्हें नहीं पता हो वे जान जाएं कि वैसे भी ऑस्कर एक पॉपुलर अवार्ड कैटगरी है, जो पूरी तरह बाजार सापेक्ष है। जगजाहिर है कि ऑस्कर मिले फिल्मों को अमेरिका–इंग्लैंड में दोबारा रिलीज कर पैसे बनाए जाते हैं, जहां सिनेमाई उत्कृष्टता से अधिक व्यवसाय–विपणन का गणित काम करता है। तेलुगु फिल्म निर्माता तम्मारेड्डी भारद्वाज का कहना है कि 600 करोड़ में बनी आरआरआर को प्रोमोट करने और अपने पक्ष में वोटरों की लॉबी करने के लिए 80 करोड़ रुपए खर्चने पड़े। इतने पैसे में तो कई फिल्में बन जातीं। यानी अकादमी में अर्थ के प्रभाव के योगदान से इनकार नहीं किया जा सकता। हालांकि इसका यह मतलब भी नहीं है कि जो इतने पैसे व्यय करेगा, उसे ट्रॉफी मिल ही जाएगी। पुरस्कार कोई आम प्रोडक्ट नहीं है, जिसे एक हाथ से पैसे देकर, दूसरे हाथ से खरीद लिया जाए।

भारत को रिझाने का एक और कारण हो सकता है। कोराना महामारी से पहले ऑस्कर पुरस्कार समारोह के लिए सबसे कम टीवी दर्शकों की संख्या 32 मिलियन थी, लेकिन 2021 में यह घटकर केवल 14 मिलियन हो गई और 2022 में यह 17 मिलियन हो गई। इससे आधिकारिक टीवी प्रसारक एबीसी के माननीयों को झटका लगा, क्योंकि इसके विज्ञापनदाताओं के लिए दर्शकों की संख्या बहुत मायने रखती है। दर्शकों की संख्या बढ़ाने के लिए विशाल भारतीय आबादी एक आदर्श विकल्प हो सकती है और इस साल यानी 2023 में दर्शकों की संख्या बढ़कर लगभग 19 मिलियन हो गई। क्या दि एलिफैंट व्हिसपर्स और नाटु–नाटु की जीत की खबर का अकादमी अवार्ड शो के दर्शकों की संख्यावृद्धि पर कोई असर पड़ा है? क्या किसी भी तरह की भारतीय भागीदारी भविष्य में इसके दर्शकों की संख्या को बढ़ावा देगी? अगर देगी, तो जाहिर है इनका बाजार बढ़ेगा। जैसे वर्षों पहले विश्व सौंदर्य प्रतियोगिता में भारतीय भागीदारी ने पर्सनल केयर उत्पादों के बाजार को आगे बढ़ाया है। सोचिए!

ऑस्कर विजेता गाना ''नाटु–नाटु'' मूलतः हाई ऑक्टेन नोट पर रचा गया एक मसाला गाना है। ऐसे गाने रचने में दक्षिण के संगीतकार दक्ष हैं और

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

उन्होंने दर्जनों ऐसे गाने रचे हैं। आरआरआर चूंकि कालजयी फिल्म है, इसलिए गाने की चर्चा हुई। वरना, ऑस्कर की सूची में नामांकित होने के पहले कहां यह गाना यूथ एंथम बन गया था? इससे अधिक चर्चा तो पुष्पा के गाने ''ऊअंतावा'' की हुई।

यहाँ स्पष्ट कर देना चाहिए कि ''नाटु–नाटु'' के पुरस्कार मिलने पर किसी को आपत्ति नहीं है, होनी भी नही चाहिए। बल्कि, आपत्ति इस बात पर है कि ''नाटु–नाटु'' के मुकाबले कई भारतीय गाने हैं, जो अतिलोकप्रिय हैं और कालजयी भी, फिर उन्हें आजतक नजरअंदाज किया गया? प्रश्न तो बनता हैं।

ठीक है लोकप्रियता के अलावा गुणवत्ता भी काई चीज होती है, यही न। तो सी. रामचंद्र सचिन, पंचम, ख्ययाम, नौशाद, नय्यर की गुणवत्ता पर ऑस्कर वालों को संदेह था क्या? अब तक क्यों नहीं आया ऑस्कर? उल्टे देखा गया है कि गानों से सुसज्जित भारतीय फिल्मों को म्यूजिकल स्पूफ कहकर पश्चिम द्वारा तंज कसा जाता था क्यों? क्योंकि तब भारत कमजोर था। गेहूं के लिए हाथ फैलाने वाला भारत। आज स्थिति अलग है, क्योंकि आज भारत सामर्थ्यवान है। इतना कि कोरोनाकाल में संकटमें फंसे अमेरिका तक को दवा भेज दी। इतना सामर्थ्यवान कि यूरोप के कई विकसित देशों के सैटेलाइट भारतीय अंतरिक्ष केंद्र से प्रक्षेपित किए जा रहे हैं। इतना सामर्थ्यवान कि रूस–युक्रेन युद्ध पर अमेरिका भी मान रहा है कि भारत को इसमें हस्तक्षेप करना चाहिए।

इसलिए, अब इतने सामर्थ्यवान भारत को कोई अंतर्राष्ट्रीय ट्रॉफी मिले या न मिले, लेकिन भारत पर पूर्व की भांति जब तंज कसना कोई अफोर्ड नहीं कर सकता। ऑस्कर वालों को यह बात पता है। भारत में क्रिकेट कूटनीति लोकप्रिय है, उसी तरह अमेरिका में सिने कूटनीति हैं। जो लोग इस के गूढ़ार्थ को समझते हैं, उन्हें पता है कि ऑस्कर समारोह में होने वाले प्रदर्शन, मजाक, ईनाम कोई संयोग नहीं, बल्कि प्रयोग होते हैं। क्रिएटिविटी, टैलेंट, आर्ट ये सब मंच पर दिखाने के लिए है... हाथी के दांत की तरह।

21वीं सदी में भारत तेजी से बढ़ रहा है। याद कीजिए, कुछ वर्ष के अंदर भारत में विश्व सुंदरियों की लाइन लग गई थी। फिर सूखा पड़ गया, क्यों? सोचिए। हो सकता है कि आने वाले अगले कुछ सालों में भारत को ताबड़तोड़ ऑस्कर थमा दिए जाएं। बेस्ट फिल्म कैटगरी वाला भी।

तीन वर्ष पहले ऑस्कर के 92 वर्ष के इतिहास में पहली बार किसी गैर अंग्रेज़ी फिल्म श्पैरासाइटश (कोरियन) को सर्वश्रेष्ठ फिल्म का इनाम मिला। यानी अंग्रेजी से बाहर देखने में ऑस्कर को पूरे 92 साल लग गए। इन 92 सालों में गोदार, त्रुफो, रोसेलिनी, फेलीनी, डि सिका, बर्गमैन, रे, कुरोसावा, टार, माजिदी, घटक, दत्त, अडूर, बेनेगल, घोष, रत्नम इन महान फिल्मकारों में से किसी की भी फिल्म बेस्ट नहीं थी? क्यों? केवल इसलिए कि ये लोग अंग्रेजी भाषा में फिल्में नहीं बनाते थे। वाकई इनके लिए एक फॉरेन लैंग्वेज कैटगरी का लेमनचूस थमा दिया जाता है। दूसरा उदाहरण देखिए, इस बार के ऑस्कर पुरस्कारों में मलेशियाई अभिनेत्री मिशेल योह को सर्वश्रेष्ठ अदाकारा का ट्रॉफी मिला।

इस तरह वे यह पुरस्कार पाने वाली पहली एशियाई महिला बनीं। फिर वही सवाल कि इतने सालों में एशिया से कोई प्रतिभा वाली कलाकार ऑस्कर वालों को नहीं मिला। यानी क्षेत्रीय व भाषाई नस्लवाद की कुंठा में डूबे लोग आज विश्व के मानक स्थापित करने लगे हैं। जब आंख में थोड़ी सी लाज बची तो कोलकाता आकर रे साहब को ट्रॉफी पकड़ा दी। उससे पहले अकादमी अवार्ड वालों ने रे की फिल्में नहीं देखी थीं क्या?

ऑस्कर वाले मदर इंडिया के समय भारत को नहीं समझ पाए थे, क्योंकि उनकी नजर में भारत तब एक कमजोर देश था। लेकिन, दुरूख है कि वे आज भी भारत को नहीं समझ पाए हैं, जबकि अब यह एक शक्तिशाली राष्ट्र बन गया है। यह उनकी नासमझी है। इसका उदाहरण ऑस्कर पुरस्कार के होस्ट जिम्मी किमेल ने आरआरआर को बॉलीवुड फिल्म कह दिया। बाद में जब सोशल मीडिया पर उनकी खिंचाई हुई, तब उन्हें गलती का एहसास

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

हुआ। लेकिन, यह सच में एक मानवीय भूल थी या जानबूझकर की गई गलती? यह महत्वपूर्ण है क्योंकि अस्सी के दशक में बंबईया सिनेमा को उपहास स्वरूप पश्चिम ने बॉलीवुड की संज्ञा दी थी। यानी हॉलीवुड की जो नकल बंबई में किया जाए, वह बॉलीवुड है।

बात थोड़ी कड़वी व अटपटी लगेगी, लेकिन सच है कि यह पूर्वाग्रह से भरे लोगों की जमात है, जो अपनी सुविधानुसार सर्टिफिकेट बांटते फिरते हैं। हमारा सिनेमा श्रेष्ठ है, यह हम जानते हैं। और हम ही अपनी श्रेष्ठता का सर्टिफिकेट स्वयं को देंगे। इतने दिनों से पश्चिम भी तो यही करता है न। हमारी मदर इंडिया बेस्ट थी, ऐसे हमारी तीसरी कसम, जागृति, नीचा नगर, झनक–झनक पायल बाजे भी बेस्ट ही थीं। और आज हमारी बाहुबली बेस्ट है। इसी प्रकार आरआरआर, तानाजी, रॉकेट्री, ए वेडनेसडे, पैडमैन, असुरन, कर्णन, कांतारा आदि भी बेस्ट हैं। देर–सबेर उनको यह बात समझ आएगी।

दस वर्ष पहले स्लमडॉग मिलेनियर के 'जय हो' गाने के लिए गीतकार गुलजार एवं संगीतकार रहमान को ऑस्कर मिले थे, हालांकि वह अमेरिकी प्रोडक्शन हाउस का प्रोजेक्ट था। आज आरआरआर के गाने व 'दि एलिफैंट व्हिस्पर्स' वृत्तचित्र को ऑस्कर मिले हैं। यह भारत पर कोई फेवर नहीं, बल्कि उनकी जरूरत है। ऐसे पुरस्कार आगे भी मिलेंगे या नहीं भी मिलेंगे। लेकिन, एक बात ब्रह्मांडीय सत्य है कि हमारी फिल्में न केवल भारतीय संस्कृति की संवाहक हैं, बल्कि विश्व का सबसे बड़ा सिनेउद्योग भी हैं, जिन्होंने भारत के व भारत के बाहर के हजारों लोगों को रोजगार दिया है। सबसे बड़ी बात है कि विश्व की एक प्राचीन सभ्यता को भारतीय सिनेमा ने नए युग में विश्व क्षितिज पर प्रचारित व स्थापित किया है। इसमें कोई दो राय नहीं कि भारत और उसका सिनेमा उत्कृष्ट स्तर का है। बस, विश्व द्वारा स्वीकारने भर की देरी है। झुकती है दुनिया, झुकाने वाला चाहिए।

संदीप सिंह घुरैया
जिला महामंत्री,
कांग्रेस कमेटी, ग्वालियर ग्रामीण
मो. 7582042003

रज्जन यादव
सिंह ट्रांसपोर्ट कं. (S.T.C)
मो. 9926905277

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट www.pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते हैं।

मे० तोताराम हरीराम सर्राफ

सोने चांदी के आभूषणों के
निर्माता एवं विक्रेता

प्रो० दिनेश कुमार गुप्ता
सदर बाजार
गोहद, जिला भिंड

आभूषण दिलवाए, घर की लक्ष्मी को सजाएं।

जय श्री कृष्णा

आपकी संतुष्टि ही हमारा ध्येय है

जय श्री कृष्णा

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते है।

भारत माता मंदिर लहार

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : अभिषेक सक्सेना द्वारा जनता ऑफसेट प्रिन्टर्स, शिन्दे की छावनी, ग्वालियर से मुद्रित एवं एल–937, दर्पण कॉलोनी, ठाटीपुर, ग्वालियर से प्रकाशित। सम्पादक– अभिषेक सक्सेना।

* ये डिजिटल संस्करण है और इसे ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है। नए माह का डिजिटल संस्करण वेबसाइट pragatisopan.com से प्राप्त कर सकते है।